डॉ रूचिरा ढींगरा
एसोसिएट प्रोफेसर,हिंदी विभाग
शिवाजीकालेज,दिल्लीविश्वविद्यालय

जैनेंद्र की सुनीता

Lesson 8

संवाद---

दो व्यक्तियों की परस्पर वार्ता = संवाद > पात्र का चरित्रोद्घाटन , कथा का विकास , वातावरण या परिप्रेक्ष्य का स्पष्टीकरण तथा लेखकीय मंतव्य का प्रकाशन

संक्षिप्त , भाव -परिस्थिति -पात्रानुकूल सरस , रोचक

सुनीता उपन्यास में संवाद पात्रों की मानसिकता, कुंठा को अभिव्यक्त

भावानुसार संक्षिप्त अथवा लंबे , तार्किक, दार्शनिक तत्वों से युक्त संवाद जटिल

सूक्ष्म भाव व्यापारों के वर्णन में लाक्षणिक, सांकेतिक भाषा

सीधे सपाट वर्णनों में भाषागत सौंदर्य

" सबको अवकाश देने के लिए उद्यत वायु के प्रति क्या तलवार की धार में स्पर्धा हो सकती है ! यह धार हवा को कैसे काटे ? उसका पैना पन उस जैसी वस्तु के आगे मानो व्यर्थ ही हो जाता है । जो तीखी धार सब कुछ काट देगी , स्वच्छ तरलता को वहीं किस दांत से काट सकती है? तीखे की , पैने की स्पर्धा यहीं कुंठित होती है । उसका अहंभाव यहीं आकर मानो क्षार- क्षार होना चाहता है।"(1)(सुनीता, जैनेंद्र, पृष्ठ 92)

उनकी भाषा में तत्सम -- अनुप्रार्थी , अपेक्षणीय ,स्वल्प , पाणिप्रार्थी

तद्भव --कुनबा , बयार , बोझ , टटोलकर

देशज -- चिथड़ा , चीन्ह , बखेड़ा , उघाड़ा

उर्दू के शब्दों - हिम्मत , फौरन , रक्त , इन्तज़ाम

अंग्रेजी के शब्द-- स्कीमिंग , मेन्युफैक्चर्ड , कान्फ्रेंसों , इंट्रोडक्शन

शब्द –युग्म- घर- गृहस्थी, हाल-चाल ,घूम -घामकर , करते- धरते

सुक्तिय--'दूरी दृश्य में रुचिरता ला देती है,' ' निष्फलता ही जगत का निष्कर्ष नहीं है ,

वाक्यांशों की पुनरावृति --भाषा की प्रभाव क्षमता को द्विगुणित

अलंकारों का प्रयोग- दृष्टांत , रूपक

आत्मव्यंजक शैली-- व्यक्तिगत समस्याओं और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों को अपना कथ्य , यथा- " हरिप्रसन्न उसी स्टडी रूम में रहा जिसमें पहले दिन कमरे में धोती का फेंट बांधे हाथ में बंधी झाड़ू लिये उसकी भाभी सुनीता उसे मिली थी । यह उसके अप्रत्याशित आगमन पर जल्दी में सिर पर धोती का छोर लेकर सिटपिटायी सी खड़ी रह गई थी। इसी स्टडी रूम में उसने शैली और शा की किताबें खींचकर उनमें अलग-अलग सुंदर -सुंदर अक्षरों में लिखा था -"श्रीमती सुनीता देवी "। इसी में उसकी ठीक की हुई उन सपति भाभी की तस्वीर अब भी रखी है । और क्यों, इस कमरे ने (ओह!)उन दोनों (पति-पत्नी) के जाने किन-किन पवित्र रहस्यों, किन किन क्रीड़ाओं और स्नेह वार्ताओं की सुरभि को अपने मन में धारण नहीं किया है! आज उसी स्टडी रूम में अपने बंडल के भीतर आदमी की जान लेने वाले इस्पात के रिवाल्वर को दुबका रखकर वह फिर आ पहुंचा ! नहीं जानता है , क्यों । और मानों वह अपने से लौटकर पूछना चाहता है - क्यों रे , क्यों?"(2) (सुनीता, जैनेंद्र , पृष्ठ 75
मनोविश्लेषणात्मक / प्रतीक शैली/ तुलनात्मक शैली / पत्रात्मक शैली

- श्रीकांत और हरिप्रसन्न के चरित्र के अंतर को तुलनात्मक शैली
- दो पत्रों का उल्लेख
- **जैनेंद्र की भाषा में त्रुटियां**
- किए हो, चाहने होंगे, हंस आना , चाहने लगा
- प्रभविष्णुता तथा शिल्प घनत्व विवेच्य कृति का वैशिष्ट्य है।